जी0 एस0 घुर्ये (G.S.Ghurye)

इकाई की रूपरेखा

2.0: उद्देश्य
2.1: प्रस्तावना
    2.1.1:जीवनवृत्त
    2.1.2: जी0 एस0 घुर्ये की समाजशास्त्र की परिभाषा
    2.1.3: घुर्ये की कृत्तियां
2.2: घुर्ये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य
2.3: घुर्ये के जाति प्रथा पर विचार
    2.3.1: समाज का खण्डात्मक विभाजन
    2.3.2: संस्तरण
    2.3.3: पेशे के अप्रतिबन्धित चुनाव का अभाव
    2.3.4: नागरिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएं एवं विशेषाधिकार
    2.3.5: भोजन तथा सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध
    2.3.6: विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध
2.4: भारत में जनजातियों का अध्ययन
2.5: भारतीय परम्परा में साधु की भूमिका
2.6: भारतीय इतिहास में प्रजाति का सिद्धान्त
2.7: घुर्ये– एक राष्ट्रवादी
2.8: घुर्ये की आलोचना
    2.8.1: हिन्दू संस्कृति का आधुनिकता पर प्रभाव
    2.8.2: घुर्ये और हिन्दुत्ववादी
    2.8.3: भारतीय इतिहास हिन्दूकरण की प्रक्रिया है
2.9: सारांश
2.10: अभ्यासार्थ प्रश्न
2.11: सन्दर्भ ग्रंथ

2.0: उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के निम्न उद्देश्य है–

- जी0एस0 घुर्ये का जीवनवृत एवं कृतियों के बारे में जान सकेंगे।
- घुर्ये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के बारे में समझ सकेंगे।
- घुर्ये के जाति प्रथा पर विचारों को समझ सकेंगे।
- घुर्ये एक राष्ट्रवादी समाजशास्त्री थे यह समझ सकेंगे।
- घुर्ये के द्वारा दिये गये भारतीय इतिहास में प्रजाति के सिद्धान्त को समझ सकेंगे।

2.1: प्रस्तावना

गोविन्द सदाशिव घुर्ये भारत के उन कतिपय गणमान्य प्रतिष्ठित अग्रणी समाजशास्त्रीयों में से है जिन्हें भारत में समाजशास्त्र विषय को प्रणीत करने का श्रेय दिया जाता है। पैट्रिक गैड्स के बाद बम्बई

विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग का कार्यभार संभालने वाले घुर्ये प्रथम भारतीय विद्वान थे। यही कारण है कि कुछ लोगों ने इस विषय के संस्थापक के रुप में घुर्ये को 'भारत के समाजशास्त्र के पिता' की उपाधि से भी विभूषित किया है। जाति और जनजाति, तथा भारतीय सामाजिक व्यवस्था के मुख्य निर्णायक आधारों पर इनका अध्ययन भारतीय समाजशास्त्र की निधि है, जो कल के साथ–साथ आज भी प्रासंगिक है। इन्होंने भारतशास्त्रीय उपागम (Indology Approach) का विकास किया। घुर्ये ने अनेक विविध विषयों पर ढेर सारी पुस्तकें तथा कई लेख और छोटी–मोटी पुस्तिकें लिखी है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगी कि घुर्ये का लेखन विश्वकोशीय प्रकृति के थे। तितली की भांति पराग एकत्रित करते हुए पूरे जोश, रुचि और विद्वता के साथ पूरे जीवन एक विषय से दूसरे विषय के अन्वेषण में जुटे रहे। शेक्सपीयर से लेकर साधुओं पर, कला, नृत्य, वेशभूषा तथा वास्तुशास्त्र से लेकर लोक देवी–देवताओं पर, सेक्स तथा विवाह से लेकर प्रजाति जैसे अनेक विषयों पर लिखा है। घुर्ये ने सांस्कृतिक तथा संस्थात्मक पक्षों जैसे जाति परिवार, विवाह, धर्म आदि विषयों के उदय एवं विकास के साथ–साथ सांस्कृतिक समन्वय की प्रक्रिया में नगरों की भूमिका जैसे विषयों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। घुर्ये ने भारतीय समाज और संस्कृति के उद्‌भव का ही नहीं, अपितु भारतीय समाज की वर्तमान समय की समस्याओं तथा सामाजिक तनावों का भी सारगर्भित एवं प्रमाणों सहित अध्ययन किया है। उनकी संस्कृत भाषा पर विशेष पकड़ होने के कारण उन्होंने संस्कृत में लिखे ग्रंथ–सामग्री का अपने विश्लेषण में प्रचुर प्रयोग किया है, किन्तु साथ ही साथ तथाकथित आधनिक पश्चिमी आनुभविक विधियों का भी जहां तहां प्रयोग करने में नहीं चुके है। इस सम्बन्ध में उनका 'बम्बई के मध्यम वर्ग के व्यक्तियों (एक प्रतिदर्श) की कामवृति सम्बन्धी आदतों' (1938) का अध्ययन उल्लेखनीय है। घुर्ये के अध्ययनों में अधिकांशतः 'क्यों' और 'क्या होगा' के दो प्रश्नों की विवेचना की कई है। उनके अध्ययनों में स्पष्टतः भूत, वर्तमान और भविष्य के मध्य एक तारतम्य नजर आता है जैसा कि उनके एक ग्रंथ 'तथाकथित आदिवासी लोग और उनका भविष्य' से प्रकट होता है। घुर्ये के अध्ययनों की यह विशेषता रही है कि उन्होंने अपने समय में समाजशास्त्र में प्रचलित तीनों मुख्य परम्पराओं यथा मानवशास्त्रीय (सहभागिक अवलोकन), समाजशास्त्रीय (सांख्यिकीय और सर्वेक्षणपरक) और भारतविद्याशास्त्रीय (पौराणिक ग्रंथिक) के प्रयोग करने का प्रयास किया है।

2.1.1 जीवनवृत्त

प्रो0 जी0 एस0 घुर्ये के समस्त जीवन को जानने के लिए 1973 ई0 में स्वयं घुर्ये द्वारा लिखित पुस्तक 'आई एण्ड अदर इक्सप्लोरेशन्स' को आधार बनाया गया है। गोविन्द सदाशिव घुर्ये का जन्म 12 दिसम्बर 1893 को भारत के पश्चिमी तट पर स्थित मालवा क्षेत्र जो कि महाराष्ट्र राज्य में स्थित है में हुआ था। इनका प्रारम्भिक शैक्षणिक जीवन उच्चकोटि का रहा है। जाति से वे सारस्वत ब्राह्मण थे। उनके परिवार में संस्कृत तथा संस्कृत ग्रन्थों का पठन–पाठन बहुत अधिक था। घुर्ये ने अपनी प्राथमिक शिक्षा मालवन में पाई थी। इसके बाद वे जूनागढ़ गये। उनकी उच्च शिक्षा मुम्बई के एलकिस्टन कॉलेज में हुई। इन्होंने अपनी सभी परीक्षाएं प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की।

घुर्ये का विवाह मालवन गांव के पड़ोसी गांव की सजूबाई के साथ 1916 में हुआ। और तब उनके समाजशास्त्रीय जीवन में एक बड़ा परिवर्तन आया। उन्होंने एम0 ए0 की डिग्री संस्कृत भाषा में की थी, समाजशास्त्र या मानवशास्त्र में नहीं। यह संयोगवश था कि उन्होंने पेट्रिक गैड्स के कुछ व्याख्यानों को बम्बई विश्वविद्यालय में सुना था। इससे घुर्ये बहुत प्रभावित हुए और संस्कृत के इस विद्यार्थी की रुचि समाजशास्त्र में जाग्रत हुई। गिड्स ने ब्रिटिश विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र में प्रशिक्षण पाने के लिए घुर्ये का चयन किया। उनकी सिफारिश पर बम्बई विश्वविद्यालय ने इन्हें लन्दन भेजा। कुछ समय तक प्रो. एल. टी. हाबहाउस के साथ अध्ययन के बाद डा. रिवर्स के मार्गदर्शन में 'Ethnic Theory of Caste' विषय पर शोध किया।

सन् 1923 में घुरिये कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि ग्रहण कर भारत लौट आये। सन् 1924 में इन्हें बम्बई विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष पर नियुक्ति प्रदान की गयी। इनकी पहली कृति कास्ट एण्ड रेस (Caste and Race) सन् 1932 में प्रकाशित हुई। इसका प्रकाशन लंदन से हुआ था। इस पुस्तक की दो विशेषताएं है– पहली तो यह कि इसमें घुर्ये ने जाति व्यवस्था की उत्पत्ति प्रजाति से बताई है और दूसरी यह कि इसने समाजशास्त्र को संसार के मानचित्र पर पहली बार स्थापित किया। यह भारत का योगदान था। इसका श्रेय घुर्ये को जाता है।

प्रो0 घुर्ये के लेखन में इतिहास, मानवशास्त्र और समाजशास्त्रीय परम्पराएँ विद्यमान है। उन्होंने न केवल स्वयं, बल्कि अपने छात्रों को भी अनुभवाश्रित अध्ययन एवं अनुसंधान करने के लिए प्रेरित किया। प्रो0 घुर्ये ने 25 से अधिक पुस्तके लिखी हैं। प्रो0 घुर्ये ने इण्डियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी (Indian Sociological Society) की स्थापना की और इसके तत्वाधान में 1952 में ''सोशियोलॉजिकल बुलेटिन**(Sociological Bulletin) नामक पत्रिका का प्रकाशन भी आरम्भ किया। प्रो0 घुर्ये Anthropological society of Bombay के 1945–50 तक अध्यक्ष रहे। इन्होंने जातियों, जनजातियों, ग्रामीण शहरीकरण, भारतीय साधुओं, और भारतीय वेशभूषा के बारे में व्यापक अध्ययन किया। घुर्ये एक बहुमुखी समाजशास्त्री के साथ साथ प्रकाण्ड विद्वान भी थे। इन्होंने समाजशास्त्र की विषय सामग्री को नये आयाम दिये। उन पर तत्कालीन समाज के विद्वानों का पर्याप्त प्रभाव था। इन विद्वानों में पेट्रिक गैड्स, हाबहाउस, रिवर्स, हडन आदि मुख्य है। एक तो उन्होंने उपने लन्दन प्रवास के दौरान समाजशास्त्र और मानवशास्त्र को निकटता से देखा और दूसरा उन्होंने अपनी संस्कृत भाषा की पंडिताई का लाभ समाज विज्ञानों को समझने में लगाया।

2.1.2 जी0 एस0 घुर्ये की समाजशास्त्र की परिभाषा

घुर्ये ने भारत के समाजशास्त्र को एक नई दिशा दी थी। इसी कारण उन्हें समाजशास्त्रीय विचारक कहते है। वास्तव में 18वीं और 19वीं शताब्दी में यूरोप और विशेषकर ब्रिटेन में प्राच्यविद्या की एक एसी लहर पैदा हो गई थी जिसका केन्द्र सभ्यता का अध्ययन था। यूनान और मिस्र की सभ्यताओं से परिचित होने के बाद अब लोगों की रुचि भारतीय सभ्यता को समझने के लिये जागी। घुर्ये वस्तुतः संस्कृत भाषा के पंडित थे। इसका प्रयोग उन्होंने यहां की सभ्यता के विश्लेषण में किया। उनका

समाजशास्त्र उनके उपनिवेशकाल के ज्ञान का परिणाम है। घुर्ये की विचारधारा को उनकी कृतियों और तत्कालीन बौद्धिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिये। उनकी विचारधारा की बनावट को हम निम्न बिन्दुओं में देखेंगे।

i- ब्रिटिश अनुकूलन (British Orientation)

लन्दन में एक बहुत बड़ा प्रयास 19 वीं और 20वीं शताब्दी में हो रहा था। वहां के विद्वान भारतीय सभ्यता की खोज में लगे थे। इस तरह की रुचि उपनिवेशवादी अंग्रेजों को भी रास आ रही थी, मैक्स मूलर जैसे विद्वानों ने संस्कृत ग्रन्थों के अध्ययन द्वारा भारतीय सभ्यता के पुनर्निर्माण की समस्या को उठाना। सभ्यता की खोज से जुड़े इन विद्वानों ने यह स्थापित किया कि भारत की सभ्यता बहुत जटिल थे। इस तरह की सभ्यता की जानकारी इन लेखकों को संस्कृत भाषा से ज्ञात हुई। घुर्ये पर ब्रिटिश मानवशास्त्रियों और इतिहासकारों का बहुत बड़ा प्रभाव था। इन विद्वानों ने यह स्थापित किया कि किसी भी सभ्यता को समझने के लिये संस्कृति और भाषा के सम्बन्धों को देखना चाहिये। कुछ विचारकों का मत था कि यूनान की सभ्यता भारत में आ गयी और यहां के लोगों ने इसे हाथों–हाथ अपना लिया। कुछ अन्य विचारकों का कहना था कि मिस्र की भाषा संस्कृत थी और किसी भी बदलाव के बिना यह भारतीय सभ्यता की भाषा बन गई। ब्रिटेन में यह विचारधारा मजबूत हो गई कि संस्कृत भाषा ज्ञान और संस्कृति की भण्डार थी। यह समझा जाने लगा कि सार्वभौमिक मानवजाति विवरण के लिये संस्कृत भाषा एक कुंजी है। सभ्यता और संस्कृत के इस संबंध ने जोर पकड़ा। प्राचीन भारतीय सभ्यता की पहचान अब हिन्दू सभ्यता के साथ होने लगी और हिन्दू सभ्यता का आधार संस्कृत भाषा बन गई। इस तरह ब्राह्मण प्रधान हिन्दूवाद भारतीय समाज की पहचान बन गई। इधर मुसलमानों को विदेशी विजेता और निरंकुश शासकों के रुप में देखा जाने लगा। यह समझा जाने लगा कि हिन्दू समाज में जो भी बुराइयां है, इसका कारण मुसलमान है। उपनिवेशकाल में भारत के लिये जो शान और गौरव की बात थी वह वस्तुतः हिन्दुओं के लिये थी। ब्रिटिश काल में भारतीय इतिहास की व्याख्या नये सिरे से हुई। अब सभ्यता को केन्द्रीय मुद्दा बनाकर यह स्थापित किया गया कि दुनिया भर की जो सभ्यताएं है– दजला, फरात, मिस्र और सिन्धुघाटी– ये सब एक–दूसरे स जुड़ी हुई है। इसी संदर्भ में यह स्थापित किया गया कि भारतीय सभ्यता वस्तुतः हिन्दू सभ्यता है। इस सभ्यता को इसके मूल रुप में वेदों में देखा जा सकता है। वेद संस्कृत ग्रन्थ है और इसलिये भारतीय सभ्यता को संस्कृत ग्रन्थों में ही देखा जा सकता है। वैदिक संस्कृति के महत्व को मैक्स मूलर ने स्थापित किया। वे ही इसके प्रणेता थे। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज को समझने के लिये हिन्दू कानून को समझना बहुत आवश्यक है। हाल में बर्नार्ड कोहन ने भारतीय समाज की व्याख्या करते हुए कहा है कि हिन्दु का जीवन निश्चित नियमों के अनुसार चलता है। कोहन की तरह रोचर रोसेन ने भी यही निष्कर्ष निकाला है कि प्राच्य विद्या विद्वानों के अनसुार भारतीय समाज को समझने का सही तरीका संस्कृत भाषा ही है। 18 वीं और 19 वीं शताब्दियों में भारत में जो भी महत्वपर्णू सामग्री आई, उसमें संस्कृत, भाषा की भूमिका महत्वपर्णू रही है इस निष्कर्ष को घुर्ये ने अपने लेखन का आधार बनाया। हाल में थोमस ट्रॉटमेन ने प्राच्य विज्ञान विद्या

की कतिपय मान्यताओं को नकारा है। उनका कहना है कि ये विद्वान भारतीय सभ्यता की गरिमा से इतने अभिभूत थे कि उन्होंने सच्चाई को देखा नहीं और वे इस सभ्यता पर पगला गये। 19 वीं शताब्दी के विचारकों ने कहा कि प्राच्य विद्या के विद्वान अतीत को देखते थे, और भविष्य के बारे में वे मौन थे। यह कहा गया कि ब्रिटिश हुकूमत भारत को आधुनिकता की ओर ले जाना चाहती थी जबकि संस्कृत भाषा के आधार पर किया गया भारतीय समाज का विश्लेषण हर प्रकार से दकियानूसी था। अंग्रेजों के आने के बाद भारत की विचित्र स्थिति थी। एक तरफ ता यह कहा जाता था कि भारतीय समाज विश्व सभ्यताओं की कड़ी में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इस कड़ी का आधार सांस्कृतिक एकता थी और संस्कृत भाषा इसका मूल था। दूसरी ओर भारत में आधुनिकीकरध की किसी भी पहल को पुरातन भारतीय सभ्यता में हस्तक्षेप समझा जाता था। घुर्ये की वैचारिकी को इसी सन्दर्भ में देखा जाना चाहिये। जहां आधुनिकता या कहिये प्रगति की बात कही जाती थी, वहां घुर्ये संस्कृत भाषा के आधार पर अतीत में लौटने की सम्भावना को देख रहे थे।

ii- भारतीय सभ्यता का राष्ट्रवादी निर्वचन (National Interpretation of Indian Civilization)

भारतीय सभ्यता पर 20वीं शताब्दी मे एक नई विचारधारा आई। इसमें कहा गया कि यह सभ्यता सम्पूर्ण संसार में श्रेष्ठ थी। आर्य इस सभ्यता के मूल थे। यह कहा गया कि पश्चिमी सभ्यता में जो कुछ है वह सब भारत से उधार लिया गया है। सन् 1830 के दशक में रोमिला थापर ने कहा कि वेदों को सम्पूर्ण ज्ञान का भंडार कहा जाने लगा। विख्यात समाज सुधारक जैसे कि राम मोहन राय ने अपने ग्रंथों में बराबर यह कहा कि भारतीय संस्कृत ग्रन्थ हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। इनसे हमें बहुत कुछ सीखना है। ये ऐस सुधारक थे जिन्होंने गीता और रामायण को लोकप्रिय बनाया। 1930 के दशक में भारत में जो विचारधारा बनी, वह सांस्कृतिक राष्ट्रीयता (Cultural Nationalism) की थी। यह राष्ट्रीयता वेदों पर आधारित थी। इस युग में कहा गया कि भारत की संस्कृति वैदिक संस्कृति है; भारतीय दर्शन वेदान्त है; और भारतीय धर्म हिन्दू धर्म है। इस तरह की विचारधारा के आधार पर सावरकर ने कहा कि भारतीय समाज मूल रुप हिन्दू समाज है।

जब भारतीय समाज को हिन्दू कहा जाने लगा तब एक और विचारधारा भी सामने आई। भारत में मुसलमान स्थायी रुप से बस गये थे।उनके बारे में इन राष्ट्रीय संस्कृति के प्रणेताओं का कहना था। 19 वीं शताब्दी के इन राष्ट्रवादी बौद्धिकों ने कहा कि मुसलमानों काभारत पर आक्रमण और यहां पर उनका निवास और कुछ न होकर ब्राह्मणों की परम्पराओं को तोड़ना था। इन लेखकों ने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि मुसलमानों की संस्कृति पूर्णतया हिन्दू संस्कृति से भिन्न थी। वे एक एकात्मकवादी धर्म को मानने वाले और साम्प्रदायिक तथा एकात्मकवादी थे। मुसलमानों के बारे में उनका राष्ट्रवादी विचार यह बन गया था कि वे अतीत में आक्रमणकारी और समकालीन समाज में पृथकवादी थे। इस विचारधारा ने यह भी स्थापित करने का प्रयास किया कि मुसलमानों ने मध्यकाल में हिन्दुओं पर बड़े अत्याचार किये थे। आज भी हिन्दु संकट के दौर से गुजर रहे हैं और उनकी संकट के दौर से गुजर

रहे है और उनकी संख्या घट रही है। कुल मिलाकर 19 वीं और 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक देश में निम्न विचारधारा बढ़ी प्रभावोत्पादक रही–

(1) भारत में आर्यो के आने के बाद इतिहास ने बड़ी महत्वपूर्ण करवट ली। आर्य और दासों के बीच में संघर्ष प्रारम्भ हो गया।

(2) हिन्दू और मुसलमानों में भाषा, धर्म और प्रजाति को लेकर मतभेद उभर आए।

(3) आर्य प्रजाति और हिन्दू जाति को पर्यायवाची समझा जाने जगा। हिन्दू जातियों में ब्राह्मणों और उच्च जातियों को एक ही श्रेणी में रखा जाने लगा।

रुचिकर बात यह है कि घुर्ये ने जो कुछ लिखा है, उसका मूल आधार संस्कृत ग्रन्थ रहे है। वे वेदों के हिमायती थे। उन्होंने जाति व्यवस्था में ब्राह्मणों को सबसे ऊँचा स्थान दिया है। यह सब लिखने के बाद उन्होंने प्रचलित इतिहास के वरण का भी विरोध नहीं किया। वे परम्परावादी विचारक ही रहे हैं।

iii- विसरण (Diffusion)

घुर्ये की विचारधारा का कोई भी विश्लेषण हो, उसमें तत्कालीन विचारों का समावेश होना अनिवार्य है। पिछले पृष्ठों में हमने राष्ट्रवादी संस्कृति की व्याख्या की है। घुर्ये ने अपने बौद्धिक जीवन में इसके प्रभाव को देखा है। वे विचारों से राष्ट्रीय संस्कृति यानी संस्कृत एक और विचारधारा लंदन से उभर कर आई। घुर्ये के लेखन पर लंदन और वहां के विद्वानों का काफी गहरा प्रभाव था। यही नई विचारधारा विसरण की थी। विसरणवादियों में पेरी (W.J. Perry), इलियट स्मिथ (G. Elliot Smith), होकार्ट (A.M. Hocart) और रिवर्स (W.H.R. Rivers) उल्लेखनीय मानवशास्त्री रहे है। इन विद्वानों ने स्थापित किया कि सभ्यता का उदय केवल एक बार होता है। यह उदय मिस्र में हुआ और तब इसका फैलाव स्थानान्तरण द्वारा दूसरे देशों में हुआ। स्थानान्तरण करने वाले ये प्रवासी स्थानीय लोगों को सभ्य बनाते हैं और इस भांति उन्हें अपने अधीनस्थ कर देते है। इसका मतलब यह हुआ कि उच्च प्रजातियों निम्न प्रजातियों पर अपना प्रभुत्व रखती है। घुर्ये की विचारधारा पर विसरणवादियों का बहुत बड़ा प्रभाव था। वे रिवर्स से अत्यधिक प्रभावित थे। जब उनका प्रवास लंदन (कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय) में था। वे रिवर्स के तिकट सम्पर्क में थे और जब 1922 में रिवर्स का देहान्त हुआ, तब घुर्ये इससे अत्यन्त दुखी हुए। उनका कहना था कि उनके जीवन की यह बढ़ी दुखद घटना थी। एक ओर घुर्ये रिवर्स के प्रसारणवाद से प्रभावित थे वहीं दूसरी ओर उनके संस्कृत भाषा के ज्ञान और प्राच्य विद्या की पकड़ ने उनकी वैचारिकी को मजबूत बनाया। बाद में चलकर, अपने जीवन के अंतिम वर्षों में जब रिवर्स ने तुलनात्मक मनोविज्ञान और बन्धुत्व को अपना विशेष अध्ययन क्षेत्र बनाया, तब इसका प्रभाव घुर्ये पर भी पड़ा। उन्होंने कहा कि समाजशास्त्र को भारतीय समाज का अध्ययन धार्मिक संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर करना चाहिये।

जब घुर्ये की कृतियों में हम उनकी विचारधारा और सिद्धान्तों को देखते है तब हमें यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि वे यूरोप में जो बौद्धिक वातावरण, पुनर्जागरण के बाद पैदा हुआ था, उससे प्रभावित थे। वे भारतीय सभ्यता को जहां व्यापक संदर्भ में देखना चाहते थे, वहीं उन्होंने संस्कृत ग्रन्थों को अपना विश्वसनीय संदर्भ समझा।

iv- घुर्ये का भारतीय सभ्यता का समाजशास्त्र (Ghurye's Sociology of Indian Civilization)

घुर्ये ने जो कुछ लिखा है, उनका केन्द्र भारतीय सभ्यता है। इस सभ्यता ने ही भारतीय समाज का गठनकिया हैं इस सभ्यता को उन्होंने संस्कृत ग्रन्थों के माध्यम से समझा है। उनका कहना है कि भारतीय सभ्यता की जो संस्कृति है वह बाहरी प्रक्रियाओं से भी प्रभावित होती रही है। मृत्यु से जुड़े हुए कर्मकाण्ड़ो का विवरण देते हुए वे कहते हैं कि कर्मकाण्ड शायद मिस्र की सभ्यता से आये है। श्रीनिवास ने एक स्थान पर कहा है कि 1040 के दशक तक घुर्ये विसरणवाद के प्रभाव में थे। इस विसरणवाद को स्पष्ट रुप से उनकी पुस्तक फेमिली एण्ड किन इन इंडो–यूरोपियन कल्चर (Family and Kin in Indo & European Culture, 1955) में देखा जा सकता है। यहां वे परिवार को बन्धुत्व की शब्दावली में देखने का प्रयास करते है। परिवार में सदस्यों के व्यवहार के तथ्यों को वे इंडो–आर्यन, यूनान लेटिन संस्कृतियों से लेते है। घुर्ये की रुचि सभ्यता के इतिहास में कई जगह देखने को मिलती है। अपनी पहली पुस्तक कल्चर एण्ड सोसाइटी (Culture and Society, 1947) में वे ब्रिटेन का सन्दर्भ देते हुए कहते है कि 1800–1930 की अवधि में इस देश ने राष्ट्र–राज्य के निर्माण के लिये कई प्रयास किये। यहां वे संस्कृति और सभ्यता के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कहते है कि ये दोनों एक ही प्रघटना के अंग है। उन्हें पृथक नहीं समझा जाना चाहिए। उनके शब्दों में, ''संस्कृति सभ्यता है और व्यक्ति इसे अपने मस्तिष्क और व्यवहार में ढाल लेता है।'' परम्परा से मानवशास्त्री संस्कृति को निरपेक्ष मानते है–संस्कृति न बड़ी होती है न छोटी। यह नहीं कहा जा सकता कि भारतीय संस्कृति अमेरिका की संस्कृति से बड़ी है। संस्कृति तो संस्कृति है प्रत्येक समूह अपनी संस्कृति को बड़ा समझता है। घुर्ये मानवशास्त्र की परम्परा से हटकर संस्कृति को छोटे और बड़े अर्थ में लेते है। ऐसा ही कुछ अर्नोल्ड टोयन्बी (Arnold Toynbee) ने इतिहास लेखन में किया था। घुर्ये ने अपनी पुस्तक आक्सीडेन्टल सिविलाइजशन (Occidental Civilization) में भी सभ्यता को परिभाषित किया है। वे कहते है कि सभ्यता एक सामूहिक प्रयास है। इस आधार पर वे पाश्चात्य सभ्यता का विश्लेषण 1300 से 1925 के काल का करते है। उनकी यह पुस्तक Occidental Civilization 1948 में प्रकाशित हुई थी।

पाश्चात्य सभ्यता का विवरण करने के बाद घुर्ये टोयन्बी की आलोचना करते है। वे सभ्यता और राजधानी के शहरों की तुलना करके बताते है कि किस भांति से बाहर अपने अवसान को प्राप्त हुए। यह तुलना उन्होंने चीन, मिस्र और भारत के शहरों की है।

2.1.3 घुर्ये की कृतियां

1. कास्ट एण्ड रेस इन इण्डिया 1932 (Caste and Race in India)
2. सेक्स हेबिट्स ऑफ मिडिल क्लास पिपल 1938 (Sex Habits of Middle Class People)
3. दि एबओरिजनल्स सो–काल्ड एण्ड दियर पयूचर 1943 (The Aborigines-'So calles' and Their Future)
4. कल्चर एण्ड सोसाइटी 1945 (Culture and Society)

5. आफ्टर ए सेन्चुरी एण्ड ए क्वार्टर 1980 (After a Century and a Quarter)

6. कास्ट, क्लास एण्ड ओक्यूपेशन 1961 (Caste, Class and Occupation)

7. फेमिली एण्ड किन इन इण्डो–यूरोपियन कल्चर 1982 (Family and Kin in Indo-European)

8. सिटीज एण्ड सिविलाइजेशन 1982 (Cities and Civilization)

9. दि शिड्यूल्ड ट्राइब्ज 1903 (The Scheduled Tribes)

10. दि महादेव कोलिज 1963 (The Mahadev Kolis)

11. एनोटोमी ऑफ ए रुरुर्बन कम्युनिटी 1963 (Anatomy of A Rururban Community)

12. दि इण्यिन साधुज 1984 (The Indian Sadhus)

13. रेस रिलेशन्स इन नीग्रो अफ्रीका (Race Relations in Negro Africa)

14. सेक्सुअल बिहेवियर ऑफ दि अमेरिकन फिमेल (Sexual Behaviour of the American Female)

15. एन्थ्रोपोलोजिकल– सोश्योलोजिकल पेपर्स (Anthropo-Sociological Papers)

16. सोशियल टेन्शंस इन इण्डिया 1968 (Social Tentions in India)

17. आई एण्ड अदर एक्सप्लोरेशन्स 1973 (I and Other Explorations)

18. विदर इंडिया 1974 (Whither India)

19. इंडिया रिक्रियेट्स डेमोक्रेसी 1978 (India Recreates Democracy)

20. वेदिक इण्डिया 1978 (Vedic India)

21. दि बर्निंग केल्ड्रन ऑफ दि नोर्थ–ईस्ट इण्डिया 1980 (The Burning Caldron of the North- East)

2.2: घुर्ये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

घुर्ये ने अनेक विषयों पर लिखा है, और उन्होंने जो अध्ययन पद्वति अपनाई है, वह ऐतिहासिक एवं भारतशास्त्रीय (Indology) पद्वति है। घुर्ये ने अपने सभी अध्ययनों में तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन पद्वति का उपयोग किया है। तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन पद्वति में घुर्ये ने उन सभी समाजशास्त्रियों को जो उनके विद्यार्थी रहे हैं, या वे लोग जो उनके सिद्धान्त से प्रभावित थे, सम्मिलित किया जा सकता है। यह पद्वति घुर्ये एवं उनके शिष्य समाजशास्त्रियों के विशाल एवं समृद्व योगदान पर आधारित है। इस पद्धति में भारतीय इतिहास तथा महाकाव्य जैसे परम्परागत स्वरुपों को आधार माना है। इसलिए घुर्ये की इस अध्ययन पद्धति को भारत विद्याशास्त्र या वाड्.मय परिप्रेक्ष्य के नाम से जाना जाता है।

घुर्ये ने अपने समाजशास्त्रीय विश्लेषण में अनेक विषयों की विवेचना की है एवं भारतीय समाज का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया है। उन्होंने जाति व्यवस्था, नातेदारी प्रथा, सौन्दर्यशास्त्र, वेशभूषा का गति विज्ञान, भारतीय नगर, ग्रामीण समाज में होने वाले परिवर्तन, भारतीय आदिवासी एवं प्रजाति, भारतीय साधुओं तथा सभ्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। भारतीय संस्कृति और समाज के विभिन्न पक्षों के अन्वेषण में उन्होंने भारत विद्याशास्त्र के स्रोतों का प्रयोग किया। उनका भारतीय साधुओं, धार्मिक चेतना तथा दो ब्राह्मणवादी संस्थाओं के रुप में गोत्र एवं चरण नामक अध्ययनों में भारत के पौराणिक एवं कई धार्मिक ग्रन्थों का प्रयोग किया गया है। घुर्ये न भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य द्वारा भारतीय साधुओं के

उत्थान, इतिहास, कार्य और वर्तमान में हिन्दू साधुओं के संगठनों का उल्लेख किया है। घुर्ये का भारत विद्याशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के प्रति काफी मोह था, किन्तु उन्होंने सामाजिक–सांस्कृतिक मानवशास्त्र में प्रचलित क्षेत्र कार्य परम्परा के प्रति भी काफी विमोह प्रकट नहीं किया। उन्होंने अपने कई अध्ययनों में अत्याधुनिक सर्वेक्षण विधि और सांख्यिकी तकनीकि ('दि महादेव कोलिज' 1963 तथा सेक्स हेबिट्स ऑफ मिडिल क्लास पिपल 1938) के अध्ययन में क्षेत्र–कार्य विधि का प्रयोग कर भारतीय समाजशास्त्र और सामाजिक मानवशास्त्र मे अनुभववादी परम्परा की जड़ों को मजबूत किया।

2.3: घुर्ये के जाति प्रथा पर विचार

घुर्ये की रुचि प्रारम्भ से ही जाति और प्रजाति से सम्बंधित विषयों में रही है। उनका पी. एच. डी. का विषय भी 'जाति का नृजातिक सिद्धान्त' था जिसके आधार पर सन् 1932 में प्रथम पुस्तक 'भारत में जाति और प्रजाति' प्रकाशित हुई। बाद में यही पुस्तक कुछ हेर–फेर, संशोधन के साथ समय–समय पर अलग–अलग नामों से ('भारत में जाति और वर्ग' 1950 तथा जाति, वर्ग और व्यवसाय, 1961) कई संस्करणों में प्रकाशित हुई। अपने विषय की आज भी यह एक प्रमाणिक पुस्तक मानी जाति है। इस पुस्तक में, घुर्ये ने जाति के उद्भव से लेकर इसके भविष्य का विश्लेषण किया है। उन्होंने जाति को एक जटिल घटना बताते हुए इसकी निश्चत शब्दों में बंधी हुई कोई सामान्य परिभाषा नहीं दी है, किन्तु इसकी छः विशेषताओं का अवश्य विश्लेषण किया है। ये विशेषताएं हैं– समाज का खण्डात्मक विभाजन, संस्तरण, पेशे के अप्रतिबन्धित चुनाव का अभाव, नागरिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएं एवं विशेषाधिकार, भोजन तथा सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध तथा विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध। जाति प्रथा की विशेषताओं का उल्लेख नीचे दिया गया है–

2.3.1: समाज का खण्डात्मक विभाजन (Segmental Division of Society)

जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को विभिन्न खण्डों में विभाजित कर दिया है और प्रत्येक खण्ड के सदस्यों की स्थिति, पद तथा कार्य सुनिश्चित है। खण्ड विभाजन से तात्पर्य– एक जाति के सदस्यों की सामुदायिक भावना सम्पूर्ण समुदाय के प्रति न होकर अपनी ही जाति तक सीमित होती है। व्यक्ति की निष्ठा एवं श्रद्धा समुदाय के बजाय अपनी जाति के प्रति होती है। प्रत्येक जाति की एक जाति पंचायत होती है।

2.3.2: संस्तरण (Hierarchy)

समाज में सभी जातियों की स्थिति समान नहीं है, बल्कि उनमें ऊँच नीच का एक संस्तरण या उताव–चढ़ाव पाया जाता है। ऊँच नीच की इस व्यवस्था में ब्राह्मणों का स्थान ऊँचा है और शूद्रों का स्थान सबसे नीचा। क्षत्रिय और वैश्य इनके मध्य में है। जन्म पर आधारित होने के कारण इस संस्तरण में स्थिरता एवं दृढ़ता पायी जाती है।

2.3.3: पेशे के अप्रतिबन्धित चुनाव का अभाव (Lack of unrestricted choice of occupation)

प्रायः प्रत्येक जाति का एक परम्परागत व्यवसाय होता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होता रहता है।

कई जातियों के नाम से ही उनके व्यवसाय का बोध होता है। प्रत्येक जाति यह चाहती है कि उसके सदस्य निर्धारित जातिगत व्यवसाय ही करें। मुगल काल से जाति के प्रतिबन्ध ढीले होने लगे। वेन्स का मत है कि ''जाति का पेशा परम्परागत होता है। परन्तु यह किसी अर्थ में आवश्यक नहीं कि उसी पेशे के द्वारा सभी जातियां जीवन निर्वाह कर रही है।'

2.3.4: नागरिक एवं धार्मिक निर्योग्यताएं एवं विशेषाधिकार (Civil and Religion Disabilities and Privilege)

जाति व्यवस्था में उच्च जातियों को कई सामाजिक एवं धार्मिक विशेषाधिकार प्राप्त है, जबकि निम्न एवं अछूत जातियों को उनसे वंचित किया गया है। विशेषकर दक्षिणी भारत में अछूत जातियों पर अनेक अयोगयताएं लाद दी गयी।

2.3.5: भोजन तथा सामाजिक सहवास पर प्रतिबन्ध (Restriction on Fooding and Social Intercource)

जाति व्यवस्था में जातियों के परस्पर भोजन एवं व्यवहार से सम्बन्धित अनेक निषेध पाये जाते है जैसे किसके हाथ का बना कच्चा भोजन करना है, किसके हाथ का बना पक्का भोजन करना है। सामान्यतया ऊँची जातियों के द्वारा बनाया गया भोजन निम्न जातियां स्वीकार कर लेती हैं। किन्तु निम्न जातियों के लोगों द्वारा बनाया गया कच्चा व कभी–कभी पक्का भोजन भी उच्च जातियां स्वीकार नहीं करती है।

2.3.6: विवाह सम्बन्धी प्रतिबन्ध (Restriction of Marriage)

जाति की एक प्रमुख विशेषता है कि प्रत्येक जाति अपनी जाति या उपजाति में विवाह करती है। वेस्टरमार्क ने तो जाति अन्तर्विवाह को जाति का सार माना है। यद्यपि कुछ पर्वतीय जातियों एवं दक्षिण के नम्बूदरी ब्राह्मणों में अपने से निम्न जातियों की लड़कियों से विवाह करने की प्रथा पायी जाती हैं। प्रो0 घुर्ये ने जाति समूहों की प्रकृति का उल्लेख किया है। वैदिक युग से लेकर ब्रिटिश काल तक जाति प्रथा में होने वाले परिवर्तनों का घुर्ये ने प्रमाणों के साथ उल्लेख किया है।

2.4: भारत में जनजातियों का अध्ययन

जी0 एस0 घुर्ये ने अपने अध्ययन में जनजातियों पर व्यापक शोधकार्य किया है। इसके साथ इन्होंने जनजातियों के विशिष्ट मुद्दों पर भी अध्ययन किया है। उन्होंने अनुसूचित जनजातियों पर अपनी एक पुस्तक में भारत की नजातियों के ऐतिहासिक, प्रशासनिक और सामाजिक आयामों का वर्णन किया।प्रो0 घुर्ये ने महाराष्ट्र के कोलियों का अध्ययन किया। घुर्ये के विचार से भारतीय जनजातियों की स्थिति पिछड़े हुए हिन्दुओं जैसी थी। इनके पिछड़ेपन का कारण था इनका हिन्दू समाज से पूरा एकीकृत न हो पाना। दक्षिण मध्य भारत में रहने वाले संथाल, भील और गोंड आदि जनजातियों के कुछ भाग हिन्दू समाज से पूर्णतया एकीकृत हो गये हैं। परिस्थितियों के मद्देनजर इनके बारे में यह कहा जा सकता है कि ये लोग हिन्दू समाज में पूर्ण रुप से वर्ग नहीं है। जनजातीय जीवन में हिन्दू धर्म के मूल्यों और प्रतिमानों को सम्मिलित करना एक सही कदम था। हिन्दूओं के सामाजिक वर्गो के साथ बढ़ते सम्पर्क के कारण जनजातियों ने धीरे–धीरे हिन्दुओं के कुछ मूल्यों और जीवन पद्धति को अपना लिया। फलस्वरुप

जनजाति के लोगों ने शराब पीना छोड़ दिया। शिक्षा प्राप्त करना आरम्भ कर दिया और हिन्दू कृषकों के प्रभाव से कृषि के तरीकों में भी सुधार किया। घुर्ये ने 'The Scheduled Tribes' नामक पुस्तक में जनजातियों की समस्याओं एवं समाधान के बारे में विस्तार से चर्चा की है। इससे पहले 'The Aborigins- so called and their future' नाम से घुर्ये ने पुस्तक लिखी थी। इस पुस्तक में घुरिये ने जनजातियों के विभिन्न नामों जैसे–आदिवासी, मुल निवासी, जनजाति, अनुसूचित जनजातियों आदि का उल्लेख किया है। साथ ही जनजातियों का हिन्दूओं, ईसाइयों एवं अन्य लोगों के सम्पर्क एवं उनमे सात्मीकरण के कारण उत्पन्न समस्याओं का उल्लेख किया गया है। जनजातियों के प्रति अंग्रेज शासको की नीति का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में जनजातियों की समस्याओं के समाधान हेतु बुद्धिजीवियों द्वारा प्रस्तुत तीन दृष्टिकोण राष्ट्रीय उपवन (National Park) पृथक्करण (Isolation) एवं आत्मीकरण (Assimilation) का उल्लेख किया गया है।

2.5: भारतीय परम्परा में साधु की भूमिका

धर्म के समाजशास्त्र में अपने अध्ययन में घुर्ये ने धार्मिक विश्वास, कर्मकाण्ड, संस्कार तथा भारतीय परम्परा में साधु की भूमिका पर प्रकाश डाला है। घुर्ये के मतानुसार, प्राचीन भारत, मिश्र और बैबेलोनिया में धार्मिक चेतना धर्म स्थलों से जुड़ी हुई थी। घुर्ये ने भारतीय धर्म में विभिन्न देवी–देवताओं यथा– शिव, विष्णु और दुर्गा आदि के उद्भव और उनकी भूमिका का सारगर्भित विवेचन किया है। उन्होंने पूजा की वृहत स्तरीय पद्धति के साथ जुड़े हुए स्थानीय और उपक्षेत्रीय विश्वासों को उजागर किया है। उनका मत है कि भारत में अनेक पन्थों के विकास और विस्तार का आधार राजनीतिक के साथ–साथ लोक समर्थन भी रहा है। घुर्ये ने अपनी पुस्तक 'इण्डियन साधूज' (Indian Sadhus) में संयास की दोहरी प्रकृति की समीक्षा की। भारतीय संस्कृति के अनुसार ऐसा समझा जाता है कि साधुओं या संयासियों को सभी जाति प्रतिमानों, सामाजिक परम्पराओं आदि से मुक्त होना चाहिए। वस्तुतः जह समाज के दायरे से बाहर होता है। शैवमतावलंबियों में यह आम रिवाज है कि जब इनके समूह का कोई व्यक्ति संयास या आत्मत्याग के मार्ग को अपनाता है तो वे इसका 'नकली दाहसंस्कार' कर देते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि वह समाज के लिए तो मृत समान लेकिन आध्यात्मिक दृष्टि से उसका पुनर्जन्म होता है।

2.6: भारतीय इतिहास में प्रजाति का सिद्धान्त (Racial Theory of Indian History)

देखा जाये तो घुर्ये सभ्यताओं के अध्ययन के विशेषज्ञ थे। उनकी रुचि सभ्यताओं के तुलनात्मक अध्ययन में थी। लेकिन ऐसा करने में उनका केन्द्र बिन्दु भारतीय सभ्यता थी। उन्होंने अपनी इस थीम को उनकी लोकप्रिय पुस्तक कास्ट एण्ड रेस इन इण्डिया (Caste and Race in India,1932) में प्रस्तुत किया है। उन्होंने प्राच्यविदों (Orientation) द्वारा प्रस्तुत मानवजाति अध्ययनों का हवाला देते हुए कहा कि भारत में इंडो– आर्यन प्रजाति 2500 ईसा पूर्व में आई। इस प्रजाति का धर्म वैदिक धर्म था। ये मोटे रुप में ब्राह्मण थे। इन्होंने गंगा के मैदानों में अपनी संस्कृति को विकसित किया। इसी सभ्यता में जाति व्यवस्था का प्रादुर्भाव हुआ। जाति व्यवस्था अन्तवैवाहिक (Endogamers) थी। इसका अर्थ था कि जाति का कोई भी सदस्य जाति से बाहर विवाह नहीं करेगा। विवाह के इस नियम के कारण जाति यानी प्रजाति के

रक्त की शुद्धता बनी रहेगी। ब्राह्मणों ने इस नियम के अन्तर्गत अपने आपको स्थानिक जनसंख्या से पृथक रखा। घुर्ये कहते है कि ये आर्य भारत में उत्तर–पश्चिम से आये। बाद में चलकर स्थानीय लोगों में स्तर हो गये और सबसे नीचा स्तर दासों का बन गया। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया कुछ इस तरह विकसित हुई कि ब्राह्मणों ने दासों के रीति –रिवाजों, विश्वासों को नहीं अपनाया लेकिन ब्राह्मणों के रीति–रिवाज समाज के निम्न स्तरों तक अवश्य आ गये। घुर्ये ने कास्ट एण्ड रेस (Caste and Race) पुस्तक के प्रथम संस्करण में प्रजाति की विवेचना विस्तारपूर्वक की है। इस समय रिजले की पुस्तक जो प्रजाति पर थी, आ गई थी। रिजले ने जाति के साथ प्रजाति के मसले को उठाया था। वास्तव में उनका विमर्श जाति का प्रजाति सिद्धान्त था। देखा जाये तो 20वीं शताब्दी में भारत में जो मानवजाति अध्ययनों की बाढ़ आई, उसका केन्द्र मानवशास्त्र में प्रजातीय विचार थे। अब मानवशास्त्री जातियों का वर्गीकरण शारीरिक लक्षणों और भाषा के आधार पर करने लगे। शारीरिक लक्षणों में रक्त समूह, खोपड़ी का घनत्व, नाक की लम्बाई–चौड़ाई, आंखों की बनावट, त्वचा का रंग, कद आदि सम्मिलित किये जाने लगे । मानव विज्ञान के विद्वानों ने सम्पूर्ण जातियों को प्रजातियों में बांट दिया। रिजले भारतीय मानवजाति विभाग के निदेशक थे और उन्होंने पहली बार जातियों को प्रजातीय संदर्भ में देखा।

भारत की प्रजातियों पर प्रो0 घुरिये के विचार (Views of Prof. Ghurye on Races of India)

घुर्ये ने भारत की हिन्दू जनसंख्या में छः मुख्य प्रजातीय तत्वों का उल्लेख किया है–

1. भारतीय आर्य (Indo-Aryan) – इस प्रजाति से सम्बन्धित लोग पंजाब, राजपूताना, तथा संयुक्त प्रान्त के भागों तक फैले हैं।

2. पूर्व द्रविडियन (Pre-Dravidian) – इस प्रजाति के तत्व संयुक्त प्रान्त की निम्नतर जातियों एवं बिहार की जनसंख्या में फैले हैं।

3. द्रविड(Dravidian)–ये प्रजातीय तत्व दक्षिण के तमिल तथा मलयाली भाषा भाषी जिलों तक फैले हैं।

4. मंगोल (Mangoloid) – ये प्रजातीय तत्व हिमालय नेपाल तथा असम तक फैले है।

5. पश्चिमी (Western) – पश्चिमी प्रतिरुप पश्चिमी सीमा स मालाबार के उत्तर, मैसूर एवं महाराष्ट्र में पाया जाता है।

6. मुंडा (Munda) – इस प्रकार के प्रजातीय तत्व छोटा नागपुर के चारों ओर केन्द्रित हैं।

इसके अतिरिक्त प्रो0 घुर्ये ने सभ्यता और संस्कृति के बारे मे अपनी पुस्तक 'Cities and Civilization' में तथा भारत और यूरोपीय संस्कृति में पायी जाने वाली पारिवारिक एवं नातेदारी व्यवस्था का तुलनात्मक एवं विस्तृत ऐतिहासिक ब्योरा अपनी पुस्तक 'Family and Kin in Indo-European Culture'नामक पुस्तक में दिया है।

2.7: घुर्ये– एक राष्ट्रवादी (Ghurye: A Nationalism)

आजकल की राजनीति में एक मुहावरा बहुत काम मे लिया जाता है लोग जो देश का एक राष्ट्र–राज्य के रुप में विकसित करना चाहते है; प्रायः सांस्कृतिक राष्ट्रीयता (Cultural Nationalism) की चर्चा करते है। कहते है कि इस देश की संस्कृतियां अनेक नहीं, एक होनी चाहिये। और यह एक संस्कृति

हिन्दू संस्कृति या हिन्दू धर्म है। घुर्ये अपनी पुस्तक कास्ट एण्ड रेस इन इण्डिया में कहते है कि भारत में प्रजाति, भाषा और संस्कृति का ऐसा मेलजोल है जो यहां की सभ्यता को बताया है। घुर्ये के ये विचार का ऐसा मेलजोल है जो यहां की सभ्यता को बताता है। घुर्ये के ये विचार सोश्यल टेन्शन्स इन इंडिया, वैदिक इंडिया और बर्निंग केल्ड्रन ऑफ नॉर्थ–ईस्ट इंडिया में बहुत स्पष्ट है। यह सही है कि घुर्ये भारत को एक एकीकृत देश बनाना चाहते थे। पर उनकी एकीकरण की विचारधारा सामान्य विचारधारा से जुदा थी। वे कहते है कि भारत के एकीकरण के लिये निरपेक्षवादियों (Secularists) ने जो सिद्धान्त रखा है, घुर्ये को स्वीकार नहीं है। इस नुस्खे के कारण देश में अलगाववादियों की शक्ति बढ़ गई है। कई तरह के दंगे हो रहे हैं, पृथक राज्य की मांग बराबर उठती जा रही है और कई तरह की विघटनात्मक गतिविधियां बढ़ रही है। घुर्ये का मत इस सम्बन्ध में इस तरह था–

1. सरकार की या नेहरु द्वारा स्वीकृत धर्म निरपेक्ष नीति में घुर्ये का विश्वास नहीं था।
2. इस देश में एकाधिक समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता।
3. राष्ट्रीय एकीकरण तभी सम्भव है जब देश के नागरिक समाज मूल्यों को स्वीकार करें।
4. घुर्ये ने कहा कि राष्ट्रीय एकीकरण तभी सम्भव है जब देश में सामाजिक एवं राजनीतिक एकीकरण हो जाये।

यह राष्ट्रवादी की तरह घुर्ये स्पष्ट रुप में कहते हैं कि इस देश में विभाजन का बहुत बड़ा कारण मुसलमान है। यह इसलिये कि मुसलमान उनके भारत मे आने की बड़ी लम्बी अवधि के बाद भी हिन्दू संस्कृति में अपना सौहार्दपूर्ण नहीं है। पिल्लई कहते है कि सौहार्द का अभाव इस कारण है कि उनके धार्मिक व्यवहार में असंगति है। घुर्ये राष्ट्रीय एकीकरण के समर्थक थे। उनकी दृष्टि में भारत में यह एकीकरण निम्न विधि द्वारा लाया जा सकता है–

1. घुर्ये मानते है कि भारतीय राष्ट्रीय एकीकरण का पहला चरण यह होना चाहिये कि हमें विभिन्न धार्मिक समूहों और पिछड़े समूहों को हिन्दू समाज की मुख्यधारा में ले लेना चाहिये। इस विचारधारा को उन्होंने अपने लेख में रखा (Untouchable Classes and their Assimilation in Hindu Society) था। उनका यह भी सुझाव था कि यदि अछूतों को हिन्दू समाज में सम्मिलित कर लिया जाये तो अस्पृश्यता की समस्या का निदान हो जायेगा।

2. घुर्ये समकालीन भारत में जातियों का जो नया अवतार दिखाई देता है, उसके विरुद्ध थे। इस संदर्भ में वे रिजले की आलोचना करते हुए कहते हैं कि उन्होंने जातियों का नामांकन जनगणना में करवा कर बड़ा गलत काम किया। राष्ट्रीय एकीकरण में जातियां विभाजक है। एकीकरण के लिये जातियों पर पाबन्दी लगाना आवश्यक है।

3. घुर्ये की यह मजबूत धारणा थी कि राष्ट्रीय एकीकरण के लिये सांस्कृतिक सजातीयता (Cultural Homogeneity) का होना अनिवार्य है। इसी कारण जाति सभा, आरक्षण और जाति आधारित आन्दोलनों के वे खिलाफ थे। ये सब एकीकरण की प्रक्रिया में व्यवधान है।

2.8: घुर्ये की आलोचना (Criticism of Ghurye)

घुर्ये समाजशास्त्र के विचारक माने जाते है। उनके कई विद्यार्थियों ने जो सम्पूर्ण देशमें फैले हुए है यही स्थापित किया है कि घुर्ये ने उपनिवेशकाल में इस बात को दृढ़ता के साथ रखा कि इस देश की सभ्यता महान है। इस देश की एकता को वास्तविक अतीत की संस्कृति में देखना चाहिये और यह अतीत हिन्दुओं और उनकी भाषा संस्कृत में है। घुर्ये अव्वल दर्जे के राष्ट्रवादी रहे है और इस बात की वकालत करते है कि एक राष्ट्र बनाने के लिये हमें वैदिक संस्कृति को पुनः स्थापित करना चाहिये। इस विचारधारा के अनुसार देश के गैर–हिन्दू समूह बेमतलब है। उनका अस्तित्व हाशिये पर है। अगर हम थोड़ी उदारता से देखें तो कहना पड़ेगा कि उपनिवेशकाल में जिस तरह की विचारधारा या जैसे ज्ञान का निर्माण हो रहा था, इसमें भारतीय सभ्यता की महानता को बताना ही हमारे हित में था। हम अंग्रेजों को यही बताना चाहते थे कि हमारा संस्कृत साहित्य महान है, हमारा धर्म उच्च है, और हमारी धरोहर हमारा धर्म है। उस समय जब घुर्ये था, वास्तव में वही हमारी पुरातनवादी विचारधारा थी। उपनिवेशकाल में पुरातनवाद ही हमारा राष्ट्रीय उपागम था और घुर्ये ने इसी पुरातनवाद को पुनर्जीवन दिया है। इस दृष्टि से वे समाजशास्त्र के जनक थे, विचारक थे। यहां हम घुर्ये की विचारधारा और उनकी कृतियों पर कुछ टिप्पणी करेंगे–

2.8.1: हिन्दू संस्कृति का आधुनिकता पर प्रभाव (Impact of Hindu Culture on Modernization)

घुर्ये ने हिन्दू संस्कृति, वैदिक संस्कृति, ब्राह्मण धर्म पर खूब लिखा है। आधुनिक भारतीय समाजशास्त्र ने घुर्ये की लिखावट की निदा भी की है। यह होते हुए भी आज का समाजशास्त्र परम्परा का बड़ा प्रशंसक रहा है। जब कभी आधुनिकता की बात कही जाती है, तब इसका विश्लेषण परम्परा के सन्दर्भ में ही किया जाता है। ल्योड रुडोल्फ और सूसेन रुडोल्फ आधुतिकता की व्याख्या परम्परा के संदर्भ में करते है। योगेन्द्र सिंह का तर्क है कि भारतीय परम्पराएं आधुनिक हो रही हैं। कुल मिलाकर आज का समाजशास्त्र हिन्दु परम्पराओं से जुड़ गया है। यह घुर्ये का प्रभाव है। जब वे हिन्दू धर्म, और ब्राह्मण संस्कृति की चर्चा करते है तब उनका तात्पर्य हिन्दू परम्पराओं से ही है।

2.8.2: घुर्ये और हिन्दुत्ववादी (Ghurye and Hinduites)

देश में वे लोग और राजनैतिक दल जो सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की चर्चा करते हैं। घुर्ये ने एक मजबूत बौद्धिक हथियार दे दिया है। इस प्रकार की सांस्कृतिक एकता, जिसे हिन्दू सभ्यता कहते है, देश को एक सूत्र में बांध देगी लेकिन इसका परिणाम देश के विभाजन में देखने को मिलेगा। यह देश बहुसांस्कृतिक, बहु–भाषायी, और बहु–क्षेत्रीय है। घुर्ये की इस तरह की विचारधारा पूर्ण रुप से विघटनकारी है। देखा जाये तो घुर्ये का समाजशास्त्र का सम्पूर्ण साहित्य भारतीय समाजशास्त्र को एक खण्डित दिशा देते है। वे आर्य संस्कृति, ब्राह्मणवाद, हिन्दू धर्म और हिन्दू राष्ट्रवाद की व्याख्या करते थकते नहीं हैं। उनके विचारों में भारत राष्ट्र–राज्य न बनकर हिन्दू राष्ट्र–राज्य बनेगा।

2.8.3: भारतीय इतिहास हिन्दूकरण की प्रक्रिया है (Indian history is the process of Hinduization)

घुर्ये की किसी भी कृति को हम उठा लें। उनकी केन्द्रीय विधि इतिहास है। वे कहते है कि मुसलमानों, आदिवासियों, सिखों, जैन आदि समूहों का विलय हिन्दु जातियों में हो जाना चाहिये। इसी मुहावरे के अन्तर्गत वे कहते है कि अब तक का सम्पूर्ण भारतीय इतिहास हिन्दूकरण का इतिहास हैं इसी विचारधारा को उनके शिष्य एम. एन. श्रीनिवास ने अधिक सशक्त रुप में रखा है जब वे संस्कृतीकरण (प्रारम्भ में इसे उन्होंने ब्राह्मणकरण नाम दिया था) की अवधारणा को रखते हैं। इस संस्कृतीकरण को योगेन्द्र सिंह ने आदिवासियों और मुसलमानों में भी देखा है। कुल मिलाकर घुर्ये का थीसिस आज का समाजशास्त्र भी दोहरा रहा है। परिवर्तन की प्रक्रियायें इस तरह चल रही हैं कि कोई भी समूह– बराबर हिन्दू बन रहा है। याद आता है जब मार्क्स ने कहा था– अब तक का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है। घुर्ये ने कहा– भारत में अब तक का इतिहास हिन्दूकरण का इतिहास है। भारत एक धर्म निरपेक्ष, प्रजातांत्रिक, एकाधिक संस्कृति का देश है।

2.9: निष्कर्ष

जैसा कि हमने इस इकाई में अध्ययन किया, जी. एस. घुर्ये ने भारत के समाजशास्त्र के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। सभी सिद्धान्तों से परिचित होते हुए भी घुर्ये ने स्वयं को किसी भी विशिष्ट सिद्धान्त के ढांचें में नहीं ढाला। केम्ब्रिज से लौटने के बाद प्रारम्भ में उन्होंने 'प्रसारवादी' सिद्धान्त के प्रति थोड़ी रुचि अवश्य प्रकट की थी, किन्तु जीवनभर वे पौराणिक संस्कृत साहित्य और मानवशास्त्रीय प्रस्थापनाओं और प्रविधियों के जरिये इतिहास और परम्परा की खोज करते रहे। मार्क्सवादी अवधारणाओं का प्रयोग नहीं किया है। वे मार्क्सवादी सिद्धान्त और अवधारणाओं से परिचित अवश्य थे और उन्होंने कोंकण क्षेत्र के एक गांव के अपने अध्ययन में एंजिल्स के 'परिवार के नियम' को उल्लेख भी किया है।

2.10: अभ्यासार्थ प्रश्न

1. जी. एस. घुर्ये के बारे में आप अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. घुर्ये द्वारा दी गयी समाजशास्त्र की परिभाषा समझाइए।
3. जी. एस. घुर्ये के जाति सम्बन्धी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
4. भारतीय इतिहास में प्रजाति के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
5. जी. एस. घुर्ये का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

2.11: सन्दर्भ ग्रंथ

• Bose, Pradeep Kumar, "A Narrative of Caste and Race in India", in Momin, A.R. (ed.), The Legacy of G.S. Ghurye: A Centennial Festschrift, Bombay, Popular Prakashan, 1996

• Carol Upadhyay, "The Hindu Nationalist Sociology of G.S. Ghurye", Sociologocal Bulletin, 51 (1), March 2002

• Chakravati, Uma, “Whatever Happened to the Vedic Dasi, Orientatism, Nationalism and a Script for the part” in K. Sangri and vaid (ed.); Recasting Women: Essays in India Colonial History, New Delhi, For Women, 1983

• Cohn, Bernard, S. “Notes on the History of the Study of Indian Society” in Bernard S. Cohn, An Anthropologist among the Listarians and pther Essays, 1987

• `Momin, A.R. (ed.), The Legacy of G.S. Ghurye: A Centennial Festschrift, Bombay, Popular Prakashan, 1996

• Pillai, S. Devadas, Indian Sociology Through Ghurye, A Dictionary, Mumbai Popular Prakashan, 1997